मैया मैं नहिं माखन खायो

Maiya Main Nahin Makhan Khayo • भजन • देवनागरी

मैया मैं नहि माखन खायो।

भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो॥

मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो॥

तू माता मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि हैं, जानि परायो जायो॥

ये ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।
सूरदास तब बिर्हसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो॥

रचना / पाठ-परंपरा: सूरदास का ब्रजभाषा पद। भोर भयो गैयन के पाछे वाला पाठांतर। पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।